ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 2.7825(UIF) VOLUME - 12 | ISSUE - 2 | OCTOBER - 2025

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर का शिक्षा और कला में योगदान

Dr. Dhanaram Uikey
Dept. of History
Govt. Penchavallley P.G. College Pararia,
Distt. Chhindwara (M.P)
PM Excellence Govt. P.G. College, Chhindwara (M.P)
Rajmata Sindhia Govet. P.G. Girls College,
Chhindwara (M.P)

सारांश :

भारतीय इतिहास में अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद क्षेत्रीय शक्तियों के उदय की अवधि माना जाता है, जिसके दौरान कई रियासतों ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण में योगदान दिया, जिनमें से सबसे उल्लेखनीय पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होल्कर (१७२५-१७९५) हैं। होलकर परिवार की महारानी के रूप में, उन्होंने तीस से अधिक वर्षों तक प्रशासन, सामाजिक कार्य, शिक्षा और वास्तुकला में अनुकरणीय कार्य किया, विशेष रूप से शिक्षा का प्रसार, विद्वानों का संरक्षण, धर्मशालाओं और भोजन आश्रयों का निर्माण, साथ ही साथ पूरे भारत में मंदिर वास्तुकला और घाट-धर्मशालाओं का पुनरुद्धार। उनके शासन में, शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिए एक प्रमुख साधन के रूप में उभरी, जिससे शिक्षा सभी वर्गों के लोगों के लिए सुलभ हो गई।

साथ ही, मंदिर वास्तुकला में उनका योगदान अद्वितीय है। उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर (१७८०) का पुनर्निर्माण करके हिंदू धार्मिक और सांस्कृतिक एकता के सूत्र की पुष्टि की। उन्होंने सोमनाथ में एक मंदिर (अहिल्याबाई मंदिर) का निर्माण करके एक नए धार्मिक जीवन का निर्माण किया और हरिद्वार, अयोध्या, मथुरा, उज्जैन, गया, द्वारका, महेश्वर आदि असंख्य स्थानों पर घाट, धर्मशालाओं और मंदिरों का निर्माण किया। घाटों और मंदिरों के समन्वित निर्माण के कारण तीर्थ स्थलों का शहरीकरण हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने धर्मशाला और मठ परंपराओं के माध्यम से पुजारियों, विद्वानों, कथाकारों, भागवताचार्यों को स्थिरता प्रदान की, महेश्वर को राजधानी बनाया और वहां कला, शिल्प, वस्त्र (माहेश्वरी साड़ियों) का विकास किया, इस प्रकार सांस्कृतिक राष्ट्र निर्माण की परंपरा को बनाए रखा।

इस शोध प्रबंध में अहिल्यादेवी के जीवन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शिक्षा और मंदिर स्थापना के योगदान का विस्तार से अध्ययन किया गया है।

बीजशब्द : अहिल्यादेवी होल्कर, शिक्षा आश्रय, महिला साक्षरता संवर्धन, गुरुकुलों की स्थापना, मंदिर पुनर्निर्माण, काशी विश्वनाथ पुनर्निर्माण, सोमनाथ, महेश्वर घाट, धर्मशाला, नगर शैली, सांस्कृतिक पुनरुद्धार, मराठा काल।

शोध प्रबंध के उद्देश्य :

१. अहिल्याबाई होल्कर के जीवन, शिक्षा और शासनकाल की विस्तृत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना।
२. शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान का गहराई से अध्ययन करना, जिसमें स्कूलों, गुरुकुलों की स्थापना और महिला शिक्षा में सुधार शामिल हैं।
३. मंदिर वास्तुकला में कार्य की विस्तृत समीक्षा, जिसमें विशिष्ट मंदिरों के पुनर्निर्माण, मरम्मत और संरक्षण शामिल हैं।
४. १८ वीं शताब्दी के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संदर्भ में उनके योगदान का मूल्यांकन करना।
५. आधुनिक भारत में शिक्षा प्रणाली, महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक विरासत पर अहिल्यादेवी के काम के प्रभाव को समझना।
६. उनके प्रशासनिक कौशल, धर्मपरायणता और सामाजिक कल्याण नीतियों का अध्ययन करना।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर का जन्म ३१ मई १७२५ को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गांव में हुआ था। उनके पिता मनकोजी शिंदे एक गांव के मुखिया थे और घर पर अहिल्यादेवी को पढ़ना और लिखना सिखाते थे, जो उस समय की महिलाओं के लिए दुर्लभ था। आठ साल की उम्र में, मराठा जनरल मल्हारराव होल्कर ने उन्हें एक मंदिर में देखा और उनकी धार्मिकता और बुद्धिमत्ता से प्रभावित हुए। उनका विवाह उनके पुत्र खंडेराव होल्कर से हुआ था। विवाह के बाद, अहिल्याबाई होलकर परिवार में शामिल हो गईं और सैन्य जीवन में भाग लिया। १७५४ में कुंबेरी की लड़ाई में खंडेराव की मृत्यु हो गई, जिसके बाद अहिल्याबाई ने सती बनने की कोशिश की लेकिन मल्हार राव ने उन्हें बाधित कर दिया। १७६६ में मल्हार राव की मृत्यु के बाद, अहिल्यादेवी के पुत्र मालेराव सिंहासन पर आए। लेकिन १७६७ में उनकी मृत्यु हो गई। अहिल्याबाई ने तब मालवा साम्राज्य की बागडोर संभाली और महेश्वर को अपनी राजधानी के रूप में रखते हुए १७९५ तक शासन किया।

१८वीं शताब्दी में, भारत में मुगल साम्राज्य का पतन हो रहा था और मराठा साम्राज्य का उदय हो रहा था। अहिल्याबाई ने राज्य की राजधानी को इंदौर से महेश्वर स्थानांतरित कर दिया और एक न्यायपूर्ण शासन स्थापित किया। उन्होंने लोगों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित किया, करों को कम किया, कृषि को प्रोत्साहित किया और व्यापार में वृद्धि की। उनके शासनकाल के दौरान मालवा साम्राज्य समृद्ध हुआ। अहिल्याबाई होल्कर द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की सूची लंबी है। अहिल्यादेवी शिव की भक्त थीं। उन्होंने पूरे देश में कई मंदिरों का जीर्णोद्धार किया जैसे आनंद काकन में विश्वेश्वर मंदिर, काशी में काशी-विश्वेश्वर मंदिर, गया में विष्णु मंदिर, सोमनाथ में महादेव का मंदिर, मराठवाड़ा में एलोरा, परली वैजनाथ और घृष्णेश्वर मंदिर। उन्होंने उज्जैन, ऋषिकेश, काशी, कुरुक्षेत्र, गंगोत्री, जेजुरी, नासिक, पंढरपुर, चौंडी आदि में मंदिरों का निर्माण कराया और कई अन्य स्थानों पर मंदिरों का निर्माण किया। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने एक बार फिर से हिंदू धर्म की रक्षा के लिए एक मजबूत नींव स्थापित की है और उन्हें 'हिंदू धर्मरक्षक' के रूप में भी जाना जाता है और किसी अन्य व्यक्ति या शासक ने अखिल भारतीय जल संरक्षण के क्षेत्र में अहिल्याबाई होल्कर द्वारा किया गया कार्य नहीं किया है।

प्राचीन काल से बहती आ रही नर्मदा नदी तो नदी ही नहीं है, बल्कि भारत की संस्कृति की अविरल धारा भी है। अहिल्यादेवी ने नर्मदा नदी के तट पर शासन किया था। अहिल्यादेवी ने वास्तुकला में अमूल्य योगदान दिया और हिंदवी स्वराज्य की वास्तुकला में अनेक प्रयोग हुए। किले का गौमुखी प्रवेश द्वार, गढ़ों का निर्माण और किलों का रणनीतिक डिजाइन, पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी द्वारा निर्मित मंदिरों, किलों, महलों और घाटों को आगे बढ़ाते हुए, हम

मंदिरों, किलों, महलों और घाटों की वास्तुकला में एक सौंदर्य दृष्टि और कलात्मकता देखते हैं। इसलिए, जैसा कि हम प्राचीन महेश्वर जैसे क्षेत्र की पवित्रता को महसूस करते हैं, इसी तरह, अहिल्यादेवी के समय में बनाई गई वास्तुकला आकर्षक है। अहिल्यारानी होल्कर मराठा साम्राज्य की एक प्रतिभाशाली नंदादीप थीं। उत्तर में रहकर उन्होंने हिंदुस्तान में राष्ट्रीय कार्य का निर्माण किया। राजनीति और सामाजिक मामलों के साथ-साथ अहिल्यादेवी के सतर्क शासन के संकेत आज भी मध्य प्रदेश में दिखाई देते हैं। शाहीर अनंत फंदी ने महेश्वर का दौरा किया था और महेश्वर की भव्यता और अहिल्यादेवी द्वारा बनाए गए घाटों का वर्णन करते हुए एक पोवाड़ा की रचना की थी।

नर्मदा तर निकट घाट।
बहुत अफाट पायऱ्या दाट।
चिरेबंदी वार मुक्तीची शिवालये।
कैलास साम्यता नाना परीची॥
रचली रामकृष्ण मंदिरे।
बहुत सुंदरे बांधली घरे॥

अहिल्याबाई को लोकमाता और पुण्यश्लोक की उपाधि इसलिए मिली क्योंकि उन्होंने जनकल्याण के लिए जीवन व्यतीत किया था। उनके शासन की ब्रिटिश अधिकारियों ने भी प्रशंसा की है। धर्म, शिक्षा, वास्तुकला और महिला सशक्तिकरण में उनकी विरासत अमर है, और उन्हें 'फिलॉसोफर क्वीन' कहा जाता था । ब्रिटिश अधिकारी सर जॉन मैल्कम ने उन्हें 'सबसे महान महिला शासक' के रूप में वर्णित किया है। अहिल्याबाई के शासनकाल में न्याय, उदारता, धर्म और संस्कृति का पुनरुद्धार, सामाजिक न्याय प्रमुख हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी का योगदान :

अहिल्याबाई होल्कर ने शिक्षा को बहुत महत्व दिया, स्व-शिक्षित थीं और उन दिनों महिलाओं की शिक्षा का एक दुर्लभ उदाहरण थीं। उन्होंने कहा कि उन्होंने विधवाओं के लिए कानून में बदलाव किए, जिससे विधवाओं को अपने पति की संपत्ति का उत्तराधिकारी बनने और शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति मिली।

१. **उनकी शिक्षा की पृष्ठभूमि और प्रेरणा:** अहिल्याबाई के पिता मनकोजी शिंदे ने उन्हें घर पर पढ़ना और लिखना सिखाया, जो १८ वीं शताब्दी की महिलाओं के लिए असामान्य था, जो उनके बाद के जीवन में प्रशासन और सामाजिक सुधार का आधार बन गया। वह व्यक्तिगत विकास और समाज सेवा के लिए शिक्षा को आवश्यक मानती थीं।

२. **स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना:** उन्होंने मालवा राज्य में कई स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की, जिससे शिक्षा सभी वर्ग के लोगों के लिए सुलभ हो गई। सामाजिक सशक्तिकरण के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हुए, उन्होंने राज्य भर में शिक्षा केंद्र शुरू किए, जिनमें महिलाओं के लिए विशेष सुविधाएं थीं।

३. **धर्मशाला और अन्नछत्र :** अहिल्याबाई होल्कर ने मंदिरों के साथ-साथ धर्मशालाओं, अन्नछत्रों, प्याऊ, तीर्थयात्रियों के लिए ज्ञान, धार्मिक चर्चाओं और पौराणिक और वैदिक अध्ययन का पोषण किया। ये धर्मशालाएं ज्यादातर मंदिरों और घाटों के पास स्थित थीं, इसलिए वे ज्ञान और संचार केंद्र थे। गरीब और छात्रों को भोजन लंगर के माध्यम से मिलता था।

४. **ब्राह्मणों और विद्वानों के लिए विशेष संस्थान:** उन्होंने 'ब्रह्मपुरी' नामक एक संस्था की स्थापना की, जिसने ब्राह्मणों को वेदों, शास्त्रों और संस्कृत में शिक्षा प्रदान की; साथ ही, उन्होंने भील और आदिवासी समुदायों के लिए स्कूल शुरू किए, जिसमें हस्तशिल्प और व्यावसायिक प्रशिक्षण शामिल थे।

५. **महेश्वर ज्ञान और संस्कृति केंद्र:** महेश्वर को राजधानी बनाते हुए, उन्होंने यहां शास्त्रों की चर्चा, कवि सम्मेलन, धार्मिक व्याख्यान आयोजित किए। महेश्वर में महल, घाट क्षेत्र और मंदिर क्लस्टर के आसपास मूर्तियां, वस्त्र, धातु कला विकसित हुई। माहेश्वरी साड़ी उद्योग शुरू किया। इससे सैकड़ों कारीगरों और बुनकरों को रोजगार मिला, माहेश्वरी वस्त्रों और शिल्प कौशल के माध्यम से एक स्थानीय कौशल श्रृंखला बनाई, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से गुरुकुलों, पाठशाला संस्कृति, पुस्तकालयों को लाभ हुआ।

६. **ज्ञान का विस्तार:** घाटों, सड़कों और तटबंधों ने परिवहन, तीर्थ स्थलों में आवास में सुधार किया। तीर्थयात्रियों ने पुस्तकों, कहानीकारों, भगवताचार्यों, विद्वानों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की। लोक ज्ञान और धर्मशास्त्र का प्रसार तेजी से हुआ।

७. **विद्वानों का सम्मान:** शास्त्रों का पाठ और प्रचार करने वालों को दान और मानदेय दिए जाते थे, साथ ही पौराणिक और वैदिक शास्त्रों के संरक्षण के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों को विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए महेश्वर दरबार में आमंत्रित किया जाता था।

८. **सामाजिक समावेशन:** अहिल्यादेवी होल्कर ने महिलाओं और वंचित वर्गों को भोजन की लंगर में भी प्रवेश प्रदान किया। 'सभी के लिए धर्मशाला' की अवधारणा उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण को दर्शाती है।

उन्होंने भील और अन्य आदिवासी समुदायों के लिए स्कूलों की स्थापना की और हस्तशिल्प, व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया, उनकी नीतियों ने महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का नेतृत्व किया, और सती प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई। उदाहरण के लिए, उन्होंने इंदौर और महेश्वर में स्कूलों की स्थापना की, जहां सभी जातियों और धर्मों के छात्रों तक पहुंच थी।

मंदिर वास्तुकला में योगदान :

मंदिर वास्तुकला में अहिल्याबाई होल्कर का योगदान हिंदू संस्कृति के पुनरुद्धार का प्रतीक है। उन्होंने मुगल आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट किए गए कई मंदिरों का जीर्णोद्धार और मरम्मत की, जिसमें १०० से अधिक मंदिर, घाट, धर्मशाला और कुंड शामिल हैं। सबसे प्रसिद्ध १७८० में काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण है, जिसे १६६९ में औरंगजेब ने नष्ट कर दिया था। इसके अलावा, सोमनाथ (गुजरात), उन्होंने ओंकारेश्वर, द्वारका, उज्जैन (महाकाल), कांचीपुरम, रामेश्वरम, मथुरा, हरिद्वार, बद्रीनाथ, जगन्नाथ पुरी, गया , वैजनाथ, नागनाथ आदि मंदिरों का निर्माण या मरम्मत की। पुरी, रामेश्वरम), सप्तपुरी (काशी, उज्जैन, आदि) और १२ ज्योतिर्लिंगों के संरक्षण के लिए वार्षिक धन और रखरखाव की व्यवस्था की। स्थापत्य शैली में मराठा, राजपूत और पारंपरिक भारतीय वास्तुकला का तालमेल दिखाया गया है, जिसमें सुंदर स्तंभ, मेहराब, उद्यान हैं। कुंड और धर्मशालाएं शामिल हैं। उदाहरण के लिए, सोमनाथ और ज्ञानवापी मंदिरों के पुनर्निर्माण ने हिंदू तीर्थ स्थलों की रक्षा की। यह कार्य धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक जागृति का एक उदाहरण है।

१. **काशी विश्वनाथ पुनर्निर्माण (१७८०):** वर्तमान काशी विश्वनाथ मंदिर का निर्माण अहिल्यादेवी द्वारा औरंगजेब युग के दौरान नष्ट हुए मंदिर के बाद पास के स्थान पर किया गया था। नागर शैली में ऊंचे शिखर,

पत्थर के गर्भगृह और पूजा के सभा कक्ष उल्लेखनीय थे। मंदिर के साथ-साथ घाट और धर्मशालाएं भी बनाई गईं। इस मंदिर को बाद में महाराजा रणजीत सिंह ने सोने से सजाया था।

२. **सोमनाथ (अहिल्याबाई मंदिर १७८३-१७८५):** गुजरात में सोमनाथ का मुख्य मंदिर तब खंडहर में था। अहिल्याबाई ने इसके बगल में एक अलग मंदिर बनवाया। आज इसे 'अहिल्याबाई मंदिर' के नाम से जाना जाता है। बाद में १९५०-५१ में सोमनाथ ट्रस्ट द्वारा महत्वपूर्ण पुनर्निर्माण किया गया था।

३. **चारधाम और सप्तपुरी का संरक्षण:** चारधाम (बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम) और सप्तपुरी (काशी, उज्जैन, आदि) की मरम्मत और रखरखाव के लिए वार्षिक धन प्रदान किया। बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार, श्रीनगर में मंदिरों का निर्माण या मरम्मत की।

४. **महेश्वर घाट और मंदिर समूह:** उन्होंने नर्मदा नदी के तट पर घाटों और मंदिरों की एक श्रृंखला का निर्माण किया। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए घाटों, प्याऊ, अन्नछत्र और धर्मशालाओं का निर्माण किया गया। स्वामी पांडे ने ऐतिहासिक पत्रिका 'अहिल्या स्मरिका' में अपने लेख 'अहिल्यादेवी द्वारा निर्मित घाट' में घाटों का वर्णन इस प्रकार किया है: महेश्वर के घाटों की एकता, शक्ति और वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां घाटों की संख्या २८ है। मुख्य घाट आकार में बड़ा है और एक तरफ इसकी लंबाई १२१ फीट है। यह १५० फीट चौड़ा है और किनारे पर नर्मदा का जोरदार प्रवाह है।

५. **ज्योतिर्लिंगों और शक्तिपीठों का पुनर्निर्माण:** १२ ज्योतिर्लिंगों (जैसे ओंकारेश्वर, महाकालेश्वर उज्जैन, भीमाशंकर, त्र्यंबकेश्वर) में से कई का पुनर्निर्माण किया और भीमाशंकर और त्र्यंबकेश्वर में पुल और विश्राम गृह बनाए। शक्तिपीठों में भी योगदान दिया।

६. **अन्य प्रमुख मंदिर और स्थल:** धर्मशालाएं, मंदिर का जीर्णोद्धार और दैनिक पूजा प्रणाली के लिए दान मूल योजना थी। हरिद्वार, मथुरा, अयोध्या, उज्जैन-महाकालेश्वर, गयाजी-विष्णुपद मंदिर, वाराणसी आदि में उनके घाटों, मंदिरों और निर्माणों के लिए दान का रिकॉर्ड है।

७. **स्थापत्य शैली और विकास:** प्रत्येक मंदिर के साथ कुंडों, कुओं, धर्मशालाओं और उद्यानों का विकास किया, जिससे तीर्थयात्रियों के लिए सुविधाएं बढ़ीं, मराठा और पारंपरिक भारतीय शैलियों कामिश्रण, जिसमें मेहराब, स्तंभ और भव्य संरचनाएं हैं। कोलकाता से काशी रोड का भी निर्माण किया।

८. **धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव:** उन्होंने हिंदू संस्कृति के पुनरुद्धार, धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक जागृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहिल्याबाई ने मंदिरों को वार्षिक रखरखाव निधि का भुगतान किया, जो उनकी विरासत को आज भी जीवित रखता है।

अहिल्यादेवी के मंदिर और वास्तुकला के अध्ययन से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि वह **धर्म + अर्थव्यवस्था + समाज** की त्रिमूर्ति पर काम कर रही थीं।

निष्कर्ष :

१. अहिल्याबाई का विकास का दृष्टिकोण धर्म, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के तीन अक्षों पर खड़ा था।
२. अहिल्याबाई होल्कर के शिक्षा सुधारों ने १८वीं शताब्दी में महिला साक्षरता और सशक्तिकरण को एक बड़ा प्रोत्साहन दिया।
३. काशी विश्वनाथ और सोमनाथ जैसे मंदिरों का पुनर्निर्माण धार्मिक विरासत का प्रतीक है।
४. महेश्वर में घाटों, मंदिरों, किलों, हस्तशिल्प क्षेत्रों ने स्थानीय रोजगार और कौशल श्रृंखला को मजबूत किया।

५. उनके मंदिर पुनर्निर्माण कार्य के परिणामस्वरूप हिंदू मंदिरों का संरक्षण और सांस्कृतिक पुनरुद्धार हुआ।
६. शिक्षा और वास्तुकला के माध्यम से, सामाजिक सुधार, आर्थिक विकास और धार्मिक सहिष्णुता स्थापित की गई।
७. उनकी विरासत आधुनिक भारत में एक शिक्षा प्रणाली, महिलाओं के अधिकारों और सांस्कृतिक विरासत के रूप में जीवित है।
८. वह महिला नेताओं और समाज सुधारकों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।
९. उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता, कल्याणकारी राज्य और सांस्कृतिक संरक्षण का एक मॉडल दिया।

संदर्भ :

English

1. *Ahilyabai Holkar. Encyclopaedia Britannica*, 9 Aug. 2025, Britannica.
2. *Kashi Vishwanath Temple. Encyclopaedia Britannica*, 13 Aug. 2025, Britannica.
3. Malcolm, John. *A Memoir of Central India, Including Malwa, and Adjoining Provinces. 1823.* Digitized ed., GIPE Repository.
4. Jahagirdar, Vijaya, and Anuja Chandramouli. *Karmayogini: Life of Ahilyabai Holkar*. Bharathi Puthakalayam, 2017.
5. Madhya Pradesh Tourism. *Devi Ahilyabai Holkar, Maheshwar & destination pages*. (Maheshwar/ghats overview), Govt. of M.P.

हिन्दी

१. *राजमाता अहिल्याबाई होलकर: मालवा की शूर रानी और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रेरणा.* भारतीय संस्कृति पोर्टल, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय, हिंदी स्निपेट/लेख, २०२५.
२. *काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर: अहिल्याबाई होल्कर द्वारा पुनर्निर्माण की कहानी. प्रभात खबर*, १३ Dec. २०२१, (अहिल्याबाई द्वारा पुनर्निर्माण संदर्भ).
३. *अहिल्याबाई होलकर: काशी विश्वनाथ, सोमनाथ और अन्य मंदिरों का पुनर्निर्माण करने वाली शूर रानी. नवभारत टाइम्स*, २० Aug. २०२१, (१७८० पुनर्निर्माण संदर्भ).
४. PIB (प्रेस सूचना ब्यूरो). *प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अहिल्याबाई होल्कर की ३००वीं जयंती पर स्मारक सिक्का और पुरस्कार की घोषणा की.* १ June २०२५ (सरकारी अभिलेखीय संदर्भ/प्रशस्ति).
५. MP Info (म.प्र. जनसंपर्क). *देवी अहिल्याबाई: जनकल्याण, सुशासन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रेरणा देने वाली मालवा की रानी.* २३ Jan. २०२५.